पाठ 14

कर्मवीर

(प्रस्तुत गीत के माध्यम से कवि कर्म वीरों की विशेषताओं को व्याख्या यह कर रहे हैं कर्म एवं समय के सदुपयोग को संदर्भित किया गया है |)

देखकर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं

रह भरोसे भाग्य के दुख भोग पछताते नहीं ||

काम कितना ही कठिन हो किंतु उकताते नहीं |

भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं ||

हो गए एक आन में उनके बुरे दिन भी भले |

सब जगह सब काल में वही मिले फूले फले ||

आज करना है जिसे करते उसे हैं आज ही |

सोचते कहते हैं जो कुछ कर दिखाते हैं वही ||

मानते जो भी हैं 'सुनते हैं' सदा सबकी कही |

जो मदद करते हैं अपनी इस जगत में आप ही

भूल कर भी दूसरों का मुंह कभी तकते नहीं

कौन ऐसा काम है लेकर जिसे सकते नहीं ||

जो कभी अपने समय को यों बिताते हैं नहीं

काम करने की जगह बातें बनाते हैं नहीं

आजकल करते हुए जो दिन गंवाते हैं नहीं

यत्न करने से कभी जो जी चुराते हैं नहीं

बात है वह कौन जो होती नहीं उनके लिए

वे नमूना आप बन जाते हैं औरों के लिए।

व्योम को छूते हुए दुर्गम पहाड़ों के शिखर

वे घने जंगल जहाँ रहता है तम आठो पहर

गर्जते जल-राशि की उठती हुई ऊँची लहर

आग की भयदायिनी फैली दिशाओं में लवर

ये कँपा सकती कभी जिसके कलेजे को नहीं

भूलकर भी वह नहीं नाकाम रहता है कहीं।

-अयोध्या ंिसंह उपाध्याय ‘‘हरिऔध’’

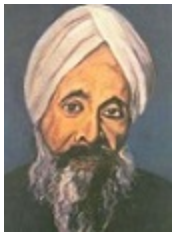

अयोध्या सिंह उपाध्याय ’हरिऔध’ का जन्म 15 अप्रैल 1865 ई0. को उŸार प्रदेष के आजमगढ़ जिले के निजामाबाद नामक स्थान में हुआ था। सन् 1932 ई0 में सरकारी नौकरी से अवकाष ग्रहण कर इन्होंने काषी हिन्दू विष्वविद्यालय में सन् 1941 तक अवैतनिक षिक्षक के रूप में काम किया। इन्होंने विविध विशयों पर काव्य रचना की। वैदेही वनवास, रस-कलष,चुभते-चैपदे,अधखिला फूल, पारिजात तथा ठेठ हिन्दी का ठाठ इनकी प्रमुख रचनाएँ है। प्रिय प्रवास हिन्दी खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य है। 16 मार्च सन् 1947 ई0 को निजामाबाद में इनका निधन हो गया।

शब्दार्थ

विघ्न = बाधा, अड़चन। यत्न = उपाय। आन=मर्यादा, षपथ। दुर्गम = कठिन। नमूना= उदाहरण। जलराषि = समुद्र। भयदायिनी = डराने वाली। व्योम=आकाश। लवर = अग्नि

की लपट, ज्वाला।

प्रश्न अभ्यास

कुछ करने को

1. इस कविता में कवि ने जीवन संघर्ष में लगे रहने की प्रेरणा दी है। इसी भाव की अन्य कविताओं का संकलन कीजिए।

2. अपनी शिक्षिका की सहायता से विश्व में शान्ति कार्य के लिए नोबेल पुरस्कार पाने वालों की सूची बनाइए।

3. 'यदि आप अपने कार्यों को सही समय पर नहीं करते तो आप को जीवन में किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।' इस विषय पर अपने विचार लिखिए।

विचार और कल्पना

1.जीवन में किसी कार्य की सफलता के लिए क्या-क्या आवश्यक है इस बिन्दु पर अपने विचार लिखिए।

2. 'कर्मठ व्यक्ति अपने जीवन में सदैव सफल होते है', इस विषय पर अपने विचार मौखिक रुप में प्रस्तुत कीजिए।

कविता से-

1. कविता में कवि ने किस की प्रशंसा की हैं ?

2. कर्मवीर दःुख मिलने पर भी क्यों नहीं पछताते ?

3. “सब जगह सब काल में फूलने फलने से” कवि का क्या तात्पर्य है ?

4. कर्मवीर दूसरों के लिए किस प्रकार नमूना बन जाते हैं ?

5. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) रह भरोसे भाग्य के दुख भोग पछताते नहीं।

(ख) काम करने की जगह बातें बनाते हैं नहीं।

भाषा की बात

1. दिए गए शब्द स्त्रीलिंग हैं या पुल्लिंग ? लिखिए-

चित्र- ------ बाधा -----

लताएं- ------ नदी -----

जंगल- ----- बात ------

2. कुछ शब्द उपसर्ग और प्रत्यय दोनों के योग से बनते हैं।

जैसे पर+ अधीन+ता = पराधीनता

आप भी इस प्रकार के शब्द बनाइए-

सम् + कल्प + ना =

दुर् + बल + ता =

अ + विश्वसनीय + ता =

अ + सम्बद्ध + ता =